Q) जैन धर्म के बारे में आप क्या जानते हैं? महावीर स्वामी के जीवन तथा शिक्षाओं का वर्णन करें।

Ans) साधारणत: जैन धर्म का संस्थापक महावीर स्वामी को माना जाता है। ऋग्वेद में दो जैन मुनियों ऋषभदेव और अरिष्टनेमी के नाम मिलते हैं। ऋषभदेव को जैन धर्म का आदि परवर्तक माना जाता है। ये जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर थे जबकि महावीर स्वामी 24वें तीर्थंकर थे। और इनसे पहले 23वे तीर्थंकर पार्श्वनाथ हुए।

महावीर स्वामी की जीवनी → इनका ~~जन्म~~ जन्म 540 ई० पू० वैशाली (बिहार) कुंड-ग्राम (वर्तमान मुजफ्फरपुर जिला) में हुआ था। इनका वास्तविक नाम वर्धमान था। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ, माता त्रिशुला देवी और राजकुमारी यशोदा इनकी ~~पत्नी~~ पत्नी थी। इनकी पुत्री का नाम अणोज्या (प्रियदर्शना) था। पार्श्वनाथ की तरह महावीर स्वामी ने भी 30 वर्ष की आयु में अपना घर त्याग दिया था। समस्त इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण वे 'जिन' कहलाए। समवत: इसलिए उनके अनुयायी जैन कहलाए। 72 वर्ष की आयु में पावा में उन्हें 468 ई० पू० में ~~निर्माण~~ निर्वाण की प्राप्ति हुई।

जैन धर्म के सिद्धांत और शिक्षाएँ →

महावीर स्वामी ने पाँच मुख्य महाव्रतों पर जोर दिया।

i) सत्य → हमेशा सत्य बोलो। कभी झूठ न बोलो।

ii) अहिंसा → कभी हिंसा मत करो कि किसी का दिल ना दुखाओ।

iii) अस्तेय → कभी चोरी ना करो, किसी का कुछ सामान देखकर ललचाना भी चोरी है।

iv) अपरिग्रह → संपत्ति का संग्रह न करो।
v) ब्रह्मचर्य → इन्द्रियो को वश मे रखो।

महावीर स्वामी के सिद्धांत → ज्ञान प्राप्ती के बाद महावीर स्वामी ने जो विचार प्रकट किए वे ही जैन धर्म के सिद्धांत और शिक्षाएं बन गए।

i) ईश्वर मे अविश्वास → महावीर स्वामी ईश्वर को नहीं मानते थे न तो ईश्वर इस संसार का रचैता है और न ही नियंत्रण करने वाला है।

ii) आत्मा का अस्तित्व → महावीर स्वामी ~~आत्मा~~ आत्मा का अस्तित्व मानते थे। प्रत्येक जीव पेड़-पौधे सभी मे आत्मा है।

iii) कर्म फल एवं पुनर्जन्म → महावीर स्वामी ने पुनर्जन्म के सिद्धांत को माना। कर्म, फल ही मृत्यु का कारण है और ये मनुष्य के कर्म पर आधारित होता है।

iv) मोक्ष / निर्वाण → सांसारिक बंधनो से मुक्ति को निर्वाण कहा गया है। कर्म, फल से मुक्ति पाकर ही व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

महावीर स्वामी ने कर्म, फल से छुटकारा पाने के लिए त्रिरत्नो को अपनाने पर बल दिया।

i) सम्यक ज्ञान → सच्चा एवं पूर्ण ज्ञान का होना ही सम्यक ज्ञान है।

ii) सम्यक दर्शन → सत्य मे विश्वास एवं सही ज्ञान के प्रति श्रद्धा ही सम्यक दर्शन है।

iii) सम्यक आचरण → सच्चा आचरण एवं सांसारिक विषयों से उत्पन्न सुख-दुख के प्रति समभाव है।

Scanned with CamScanner

सम्यक आचरण है।

जैन संघ ने जैन संघ में भिक्षु, भिक्षुणि, श्रावक एवं श्राविका आते थे। भिक्षु, भिक्षुणी सन्यासी जीवन व्यतीत करते थे। श्रावक और श्राविका गृहस्थ जीवन व्यतीत करते थे।

दिगम्बर एवं श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने महावीर स्वामी की 468 ई० पू० मृत्यु के पश्चात लगभग 200 वर्षों बाद मगध में भीषण अकाल पड़ा। भद्रबाहु के नेतृत्व में कुछ जैन दक्षिण की ओर चले गए। स्थूलभद्र के नेतृत्व में कुछ लोग मगध में ही रह गए। स्थूलभद्र के अनुयायी ने श्वेत वस्त्र धारण करना आरम्भ कर दिया। कुछ उदार एवं सुधारवादी हो गए। ये पार्श्वनाथ के अनुयायी थे। ये श्वेताम्बर कहलाए। भद्रबाहु के अनुयायी महावीर स्वामी के कट्टर अनुयायी बने रहे। वे नग्न रहते थे। जैन धर्म के सिद्धांतो का सख्ती से पालन करते थे। ये लोग दिगम्बर कहलाए।

Q) महात्मा बुद्ध की जीवनी तथा उनके शिक्षाओं का वर्णन करें।

Ans) गौतम बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। उनका जन्म 563 ई० पू० कपिलवस्तु के निकट नेपाल की तराई लुंबनी नामक गाँव में हुई थी। उनके पिता शुद्धोधन तथा माता महामाया। गौतम बुद्ध के जन्म के 7वे दिन ही उनकी माता का देहांत हो गया था। अतः उनकी लालन-पालन महाप्रजापति गौतमी ने किया। बुद्ध के जन्म के समय कालदेव तथा ब्राह्मणो ने यह

भविष्यवाणी की थी कि वे या तो चक्रवर्ती राजा बनेंगे अथवा महासन्यासी बनेंगे। बुद्ध बचपन से ही चिंतनशील रहते थे और जंबु वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न बैठे रहते थे। उनकी इन गतिविधियों को देखकर उनके पिता ने यशोधरा नामक एक सुंदर कन्या से 16 वर्ष की आयु में शादी कर दी थी। जिससे उनको एक पुत्र प्राप्त हुई। जिसे उन्होंने अपना मोह-बंधन मानते हुए 'राहु' माना और उसका नाम राहुल रखा। महात्मा बुद्ध के जीवन में चार ऐसी घटनाएँ हुई जिनको देखकर दुखमय जीवन के प्रति गौतम बुद्ध के मन में बहुत चोट पहुँची और उन्होंने दुख निरोध का मार्ग खोजने का प्रयास किया। ये घटनाएँ निम्न है।

i) एक जर्जर शरीर वाला बूढ़ा व्यक्ति।
ii) एक रोग ग्रस्त व्यक्ति।
iii) एक मृत व्यक्ति।
iv) एक प्रसन्न मुद्रा में भ्रमणशील सन्यासी जो सांसारिक मोहों से मुक्त था।

गौतम बुद्ध की शिक्षाएँ :- बौद्ध धर्म बुद्धिवादी धर्म था इसमें अंधविश्वासों का स्थान नहीं था। बौद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य के जीवन का एक मात्र ध्येय निर्वाण प्राप्ति है। गौतम बुद्ध ने संसार के चार आर्य सत्य के बारे में बताया। ये है—

i) दुख :- गौतम बुद्ध के अनुसार समस्त संसार दुखों से भरा है।
ii) दुख समुदाय :- समुदाय का अर्थ है कारण। बुद्ध के अनुसार संसार में हर दुख के पीछे कोई-न-कोई कारण होता है।

iii) दुख निरोध → निरोध का अर्थ है- 'दूर करना'। गौतम बुद्ध ने दुखो को दूर करने के लिए तृष्णा का मार्ग आवश्यक बताया है।

iv) दुख निरोध मार्ग → गौतम बुद्ध के अनुसार संसार मे प्रिय लगाने वाली वस्तु को तृष्णा का परित्याग ही दुख निरोध का मार्ग बताया है। गौतम बुद्ध द्वारा दुख निरोध के आठ मार्ग बताए गए है जिसको अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। ये निम्न है-

i) सम्यक दृष्टि → सम्यक दृष्टि का अर्थ होता है चार आर्य सत्यो की परख करना।

ii) सम्यक वाणी → सम्यक वाणी का अर्थ होता है अपने बोलचाल मे मधुर वाणी का प्रयोग करना।

iii) सम्यक संकल्प → संकल्प से अर्थात भौतिक वस्तु एवं भौतिक सुखो का त्याग करना।

iv) सम्यक कर्म → कर्म का अर्थ अच्छा काम करने से है जिससे सदा दूसरो को लाभ पहुंचे।

v) सम्यक आजीव → सदाचारी जीवन जीते हुए ईमानदारी से आजीविका ~~कमाना~~ कमाना।

vi) सम्यक व्यायाम → विवेकपूर्ण प्रयासो एवं शुद्ध विचारो के साथ अशुद्ध विचारो को त्याग करना।

vii) सम्यक स्मृति → अपने कर्मो के प्रति विवेक तथा सावधानी को हमेशा याद रखना अर्थात मन, वचन, कर्म की प्रत्येक क्रिया के प्रति सचेत रहना।

viii) सम्यक समाधि → लोभ, द्वेश, आलस्य, बीमारी एवं अनिश्चय की स्थिति से दूर रहने के उपाय करना ही सम्यक समाधि है। इससे [illegible]

सुख की प्राप्ति होगी।

बुद्ध के अनुसार यदि व्यक्ति उपर्युक्त अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करे तो वह दुखो से मुक्त हो सकता है और इसी मुक्ति के साथ उसे निर्वाण की प्राप्ति हो सकती है।

Scanned with CamScanner